CURRENT GLOBAL REVIEWER

Half Yearly | **UGC Approved** | **ISSN : 2319 - 8648**

Issue X Vol IV Sept. 2018 | **Sr. No. 64310** | **Impact Factor : 2.143**

"रघुवीर सहाय की कहानियों मे सामाजिक विषमता"

प्रा.डॉ.महादेव चिंतामणी खोत

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, श्रीकृष्ण महाविद्यालय गुंजोटी ता.उमरगा. जि.उस्मानाबाद

साहित्य समाज का दर्पण होता है। अतः साहित्य और समाज का अटूट संबंध होता है। समाज में घटित सभी घटनाओं का साहित्य पर प्रभाव होता है। रचनाकार समाज को हर गतिविधियों से परिचित होता है और वह उसका चिंतन करके लोककल्याण के लिए साहित्य लिखता है। समाज के साथ जूडी हरव्यथा, दुःख, पिडा से रचनाकार अवगत होता है।

रघुवीर सहाय एक ऐसे सहित्यकार है कि उनका सीधा समाज के साथ संबंध रहा है। रघुवीर सहाय ने एक सफल कहानीकार के रुप मे गौरव प्राप्त किया है। कहानियों में आपने जीवन विषयक दृष्टीकोन को अद्वितिय रुप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने जीवन के संघर्ष को लेकर कहानियाँ लिखी है। कहानीकार ने कहानियों में सामाजिक चेतना को चित्रित किया है। छोटे-छोटे प्रसंगो को उन्होने कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

रघुवीर सहाय कहानियाँ लिखने के बारे में व्दिधा मनःस्थिति में थे। इस संदर्भ मे कहानीकार 'रास्ता इधर से है' की भूमिका मे लिखते है 'जिस तरह कहानी न लिख पाने पर भूमिका लिखी उसी तरह और कुछ न लिख पाने पर मैने ये कहानियाँ क्यों और कैसे लिखी। परंतु यह जानकर मुझे एक रचनाकार को संतोष मिलता है कि इनमें से प्रत्येक रचना एक न एक विधा का विकल्प है, बहुत करके कविता का क्योंकि वही मै लिखना चाहता रहा हूँ, ज्यादा तर।"

समाज मे अमीरी गरीबी तो रहने वाली है। ईश्वर सभी को समानता प्रदान नही करता है, एक ही माँ के कोख से जन्मे दो बेटों में समानता नही होती, तो समाज में कैसी समानता हो सकती है। धन की कमी के कारण सामाजिक विषमता का शिकार होना पडता है। रघुवीर सहायजी ने कवि और पत्रकार होने कारण सामाजिक विषमता को नजदिक से देखा है। 'आधीरात का तारा, ' गुब्बारे, 'घरौंदा', 'सेब'। 'मरे और नंगे औरत के बीच' 'कोठरी', 'सरकस' आदी कहानियाँ सामाजिक विषमता का चित्रण करने वाली है।

रघुवीर सहाय ने कवि के साथ-साथ कहानीकार के रुप मे भी अपनी पहचान निर्माण की है। रघुवीर सहाय जी ने समाज से हटकर कहानियाँ नही लिखी है। कोई भी साहित्य समाज से हटकर नही होता है। साहित्य समाज के अंतर्गत रुढी, परंपरा, विषमता, दारीद्र्य, आर्थिक संपन्नता-विपन्नता चित्रित होती है। वही साहित्य लोग कल्याणकारी और समाजहितैषी बनता है। रघुवीर सहाय एक ऐसे साहित्यकार है कि, उनका समाज की हर पहलूओं के साथ अटूट संबंधरहा है।

दुनिया में सभी जीव अलबेल स्थिती में नही रहतें है। किसी के लिए दुःख, किसी के लिए सुख, किसी के लिए यातना, किसी के लिए आर्थिक संपन्नता, किसी के लिए आर्थिक विषमता, किसी के लिए जातिगत, धर्मगत विषमताओं का शिकार होना पडता है। समाज में दो वर्ग होते है- शोषक और शोषित, अमीर और गरिब, उच्च और नीच, विकसित और अविकसित।

समाज के अंतर्गत कुछ लोग अट्टालिकाओं में जीवनयापन करते है तो कुछ लोग झोपडी में अथवा फुटपाथ को ही अपना घर मानकर निवास करते है।आर्थिक विषमता के कारण ये सब उन्ही को भुगतना पडता है। रघुवीर सहाय ने इस सामाजिक विषमता का चित्रण किया है।

रघुवीर सहाय ने 'आधी रात का तारा' कहानी में सामाजिक विषमता को प्रस्तुत किया है। रात तो सभी जगह होती है, शहर में, गॉव में, जंगल में, महलो में, झोपडी में। शहर की रात उत्सव के समान होती है। ऐसा लगता है कि शहरों में ऐश्वर्य अॅगडाई ले रहा है। उत्सव के समय जैसे नर्तकीय नाचगान करके सभी उपस्थित जनों को मन रिजाने का काम करती है और वहाँ उपस्थित लोग शराब की बोतले खाली करते हुएँ नाच गान का मजा ले रहे है। शहरों की रात उत्सव का और मदहोश का रुप लेकर आती है क्योंकि शहरों में रहने वाले लोगों के

Scanned with OKEN Scanner

पास आधुनिकता के साथ-साथ रुपयों की अधिकता भी होती है। शहरों की रात देखकर लगता है की स्वर्ग की इंद्रसभा ही धरती पर उतर आ गई है।

रघुवीर सहाय ने 'आधी रात का तारा' कहानी में शहरों केरात के साथ साथ गाँव के रात का भी वर्णन किया है। गॉव की सडके गलिच्छ होती है। गॉव के घर सडकों के निचे गड्डे में होते है। गॉव के घरों में लुडकी हुयी हांडिया और बूझे हुएँ चूल्हे होते है। ऐसे ही गाँव के घर मे एक बच्चा रोते हुएँ कुछ कह रहा है उसे जो कुछ कहना है वह असीम वेदना से व्यक्त नही कर पाता है। उस शहरों के ऐश्वर्य तक उसके रोने की आवाज नही पहुँच रही है। गरीब के बच्चे का स्वर सुननेवाला दुनिया में कोई नही है। गरीबी के कारण आर्थिक विषमता रहती है। हर दिन मेहनत करने के बाद ही रोटी नसिब होती है ऐसे समय में औरतों को बाल सॅवारने के लिए फुरसत नही मिलती, उनके आँखों मे तेज नही रहता है पेटभर रोटी न मिलने के कारण सीने की हड्डीयाँ उभर कर दिखाई देती है ऐसी विषमता समझने वाला दुनिया में कोई नही है। रघुवीर सहाय सामाजिक विषमता को गहराई से स्पष्ट करते हुएँ लिखते है की – "लुडकते हुए हांडियाँ, बूझा हुवा चूल्हा और रोता हुआ बच्चा, एक साथ मिलकर कुछ कहना चाह रहे है किंतू जो कुछ कहना है उसी की असीम वेदना से उनका कंठ रुद्ध हो गया है। कोठे तक उनका स्वर पहुँच नही पाता।"

रघुवीर सहाय सामाजिक विषमता को स्पष्ट करते हुएँ लिखते है की एक संपन्न परिवार में शयन गृह के लिए चौडी खिडकियाँ और उसको महिन से महिन परदें है, आकर्षित करने वाले सुंदर रोशनदान है। ऐसे शयन ग्रह में मदहोश युवती अपने प्रियतमा के आँखो मे आँखे डालकर देख रही है। उसका प्रियतम आनंद अतिरेक से कुछ मधुर स्वर में कह रहा है। उसी समय उस आलसाई युती का आँचल हवा में उडकर प्रियतमा के शरिर पर गिरता है तब युवती कुछ कहती नही है। सिर्फ देखती और मुस्कुराती है। एक और ऐसा दृष्य है तो दूसरी ओर गरिब परिवार का दृष्य है जहॉ कोई बडा मकान नही है चौडी खिडकियाँ नही है और महिन परदे नही है आवश्यकता के अनुरुप रोशनदानों से प्रकाश आता हैअ उस रोशन दानों में मकडियों ने जाला बना दिया है। बच्चों से लेकर बूढों तक चिथडोंसे युक्त कपडें पहनते है। तेल के डिबरी के प्रकाश में छोटा बच्चा सोते से जाग जाता है और अंधकार में माँ को खोजता है और माँ न मिलने पर रोने लगता है।माँ अँधकार में गिरती पडती हुयी बच्चो को लेने आती है। पिछले तीन दिनों से उस माँ ने कुछ खाया नही है क्योंकि उनके घर में पकाने के लिए कुछ नही है। उस परिवार का पुरुष जेल से छुटने के बाद छेनी और बरमा लेकर कुछ कमाने के लिए चल पडता है। अपनी पत्नी और बच्चे के परवरिश की जिम्मेदारी उसके उपर है। पत्नी सोचती है की पती निश्चित रुप से भोजन के लिए कुछ लेकन शिघ्र ही आएगा और अपने कलेजे के टूकडे को खाना मिलेगा। लेकिन वह आभागा पति कुछ न मिलने के कारण खाली हात घर लौट आता है। वो कोठरी में घुसकर निरीह बच्चों को देखकर पत्नी की ओर बरबस दृष्टी फेरकर मजबूरन कहता है- "जान पडता है अपनी किस्मत का तारा टूट गया है'।"

रघुवीर सहाय जी ने 'गुब्बारे' कहानी में गुब्बारे बेचने वाले की दारिद्र्यता का चित्रण किया है। इसमें रामू और वर्मा की लडकी इन दोनों की सामाजिक विषमता स्पष्ट की है। रामू पेट पालने के लिए नंगे पैरों से गुब्बारे और खिलोंने बेचने का काम करता है। एक ओर रामू जीवन जिने के लिए संघर्ष करता है तो दूसरी ओर मिस्टर वर्मा की लडकी महीन से महीन कपडे पहनकर गुब्बारे और खिलोने के साथ खेलती है। रामू खुद लडका होकर और खुदके गुब्बारे और खिलोंने होने के बावजूद भी खिलोंने खेलना और गुब्बारे उडाना नसिब नही होता है इसी लिए रामू को मन ही मन दुख होता है इस संदर्भ में रघुवीर सहाय 'गुब्बारे' कहानी में लिखते है की- "रामू को स्वयं हवा मे उडने वाले गुब्बारे पसंद थे हालाँकि उसके हाथ में २०-२५ गुब्बारे रहते थे किंतू वह एक-एक गुब्बारे के लिए तरसा करता था । जो उसका बिलकूल अपना हो। वो चाहता था बडासा बैंगनी गुब्बारा बिलकूल अपना हो और वह उसके साथ जी भरके खेले, एक बार उसे अपने चुटकीयों में पकडकर छोड दें'रामू की यही इच्छा कभी पूरी नही हुयी।

रघुवीर सहाय जी ने कई कहानियाँ लिखी है लेकिन उन्होने उन कहानियों में सामाजिक विषमता का, त्योंहारों का और परंपराओं का चित्रण कर उसे सशक्त बनाया है। 'घरौंदा' कहानी के अंतर्गत मध्यम वर्गीय

Scanned with OKEN Scanner

आदमी और अमीर आदमी के बीच की सामाजिक विषमता स्पष्ट की है। समाज में हम आज देखते है की अमीर परिवारों में शादी हो या त्यौहार वह धूम धाम से मनाया जाता है। क्योंकी उनके पास रुपयों की कमी नही होती है। वे सभी सुख रुपयों से खरीदते है। सामान्य परिवार अथवा गरिब परिवार में कमाने वाले कम होते है और खाने वाले अधिक होने के कारण हर समय रुपयों का इंतजाम नही कर पाते है। रोटी, कपडा और मकान इन आवश्यक चिजों के लिए जीवनभर झगडते रहते है। रघुवीर सहाय 'घरौंदा' कहानी में वर्णन करते है की उनके घर के उपर लगाएँ गए दिये बार-बार लगाने के बाद भी बुझते है लेकिन पडोस के घरो के उपर लगाए गए दिए के प्रकाश से पूरा घर प्रकाशमान हो उठता था क्योंकी उनके दिये में तेल बहुत डाला जाता था। और हमारे घर में लगाए गए दिए में तेल कम होने के कारण जरा सी हवा आती थी तो बूझ जाते थे। इसी वजह से पडोस के दिए बूझते नही थे। कहानीकार को लगता है की दिये बूझने वाला परिवार गरिब है और पडोस का परिवार पैसो वाला है। पैसो के बल पर हर क्षेत्र में आगे चले जाते है। इस संदर्भ में कहानीकार लिखते है की- 'हम गरिब है- पडोसी पैसे वालें है। इस लिए हमारे यहॉ दिए जलते नही रह पाते। जैसे अन्य क्षेत्रो में अपने सामर्थ्य के बल पर सपलता पा लेते है और हम से आगे निकल जाते है वैसे ही यहॉ भी है।इसके लिए हवाँ से नही बूझ रहे है-ठीक ही तो है- इनके पास पैसा है-क्या न हो।'

'सेब' कहानी में गरिब परिवार के भरण पोषण में कैसी दिक्कत आती है इस बात को प्रस्तुत किया है। पिता अपनी ढच्चर चलने वाली गाडी से अपनी बच्ची को अस्पताल ले जाता है। रास्ते में गाडी की ढीबरी चिटककर गिर पडती है। उस ढिबरी को काफी समय तक ढुंढता है। इसमें काफी समय चला जाता है।आर्थिक विषमता के कारण अच्छी मोटार गाडी से जल्द से जल्द बच्ची को अस्पताल नही ले जा पाता। ढच्चर गाडी से ले जाने के कारण काफी देर होने के बावजूद भी भूखी बच्ची को सेब नही लाकर दे सकता क्योंकि उनके पास पैसों की कमी होती है। आर्थिक परिस्थिती कमजोर होने से जिंदगी में हर समय संघर्ष करना पडता है। बच्ची को तपेदीक होने पर भी अच्छे अस्पताल नही ले जा सकता क्योंकी वहाँ ले हाने के लिए उनके पास पैसे नही है। कहानिकार इस संदर्भ में कहते है की-"मुठ्ठी में वह लाल चिकना सेब था जो उसे बिमार होने कारण नसिब हो गया था और इस वक्त उसके निढाल शरीर पर खूब खिल रहा था।"

रघुवीर सहाय जी ने छोटीसी छोटी घटनाओं को साहित्य में स्थापित किया है। सामाजिक विषमता के संदर्भ में कहतें है की उसका शिकार नर, नारी, बूढे बच्चे, गरिब सब होते है। अपने 'एक छोटीशी यात्रा' कहानी के अंतर्गत एक छोटे बच्चे पर पेट भरने के लिए अखबार बेचने का काम करना पडता है। खेलने कुदने के उम्र में उन्हें जीवन जीने का भार उठाना पडता है। अगर वह उखबार बेचने के लिए नही जाता ता उन्हें भूखे पेट सोने की नौबत आती है। जीवित रहने के लिए कोई ना कोई काम करके पैसा कमाना पडता है। ऐसे कई लडको का लडकपन सामाजिक विषमता ने छिन लिया है। 'एक छोटीशी यात्रा' कहानी के छोटे बच्चे का हाथ बस की खिडकी तक पहूँच नही सकता लेकिन उसे मजबूरी से अखबार बेचने के लिए एडिया उठाकर पंजो के बल पर अखबार खिडकी तक पहूँचाना पडता है। कहानीकार कहते है की- "छोटे लडके ने छूटककर पंजो के बल पर खडे होकर किसी तरह अखबार खिडकी तक पहूँचा दिया। शाब्बास! मुस्कुराकर मैने ले लिया उसके और प्यार से मैने देखा। उसकी हिम्मत बढाने के लिए खूब लडका बहादूर है।"

रघुवीर सहाय जी ने ' मेरे और नंगे औरत के बिच' कहानी में पुरुष और स्त्री में होने वाली सामाजिक विषमता को प्रस्तुत किया है। पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था में स्त्री हर बार शिकार बन चूकी है। रेल के डिब्बे में सभी लोग यात्रा कर रहे है। लेकिन एक औरत सर्दी से सिकुडी हुयी है उसकी प्रति कोई रेहमदिल नही होता है। सभी लोग देख रहे है। उसके पास ओढने के लिए कोई चादर नही है। पहले तो कहानीकार ने वहाँ कोई इंसान है या नही यह पहचाना ही नही बाद में उन्हे लगता है वह इंसान है पर उसको हाथ पैर नही है। घुटनों में मुँह डाल कर बैठी हुयी है। सिर पर छोट-छोटे बाल है। कहानीकार के मन में सहानुभूती निर्माण होती है परंतू नैतिकता आड आती है। उन्हें समाज का डर है स्त्री की पुरुष की विषमता की बात स्पष्ट करते हुए उन्हें लगता है - मैं उन्हें कंबल दे रहा हूँ इतने में सब लोग देखेंगे और वह क्या कहेंगे तब सब संबंध खुल जाएगा। मुझे अच्छा नही

Scanned with OKEN Scanner

लगेगा। इस संबंध में कहानीकार कहते है की – "पर कैसे ? इतने लोग है, सब देखेंगे की मै दे रहा हूँ और हमारा संबंध खूल रहा है। यह मैं न होने दे पाउंगा, न सह पाउंगा।"

कहानीकार 'कोठरी' कहानी में सामाजिक विषमता के शिकार रघुवर भगत की जीवनी को प्रस्तुत किया है। आज समाज में कई लोग अमीर ही अमीर है लेकिन रघुवर भगत जैसे लोगों को दो समय की रोटी के लिए घर छोडकर शहर जाना पडता है। और लखनौ के गली की सडक के चौराहे पर खुलें में ही रहना पडता है। खुलें में ही रघुवर भगत पत्नी और लडका एक छोटीशी जगह में रहते है। एक तरफ लखनौ शहर में महल ही मेहल है तो दूसरी तरफ रघुवर को रहने के लिए घर तो नही है लेकिन खुली जगह भी जितनी चाहिए उतनी भी नही मिलती है ।

कहानीकार ने 'सरकस' कहानी में सामाजिक विषमता का चित्रण करते हूए स्पष्ट किया है की आदमी को रोजी रोटी के लिए झगडना पडता है। समाज में कुछ लोगों के पास आवश्यकता से अधिक संपत्ती है तो कुछ लोगों के लिए सामान्य रुप से जीवन यापन करने के लिए संघर्ष करना पडता है। सरकस के अलग-अलग जानवर और आदमियों को रोजी रोटी के लिए अपने अपने करतब दिखानी पडती है। जीवनभर संघर्ष करते हुए जीवन जीता है और बुढापे के दिनों में भी मेहनत किए बिना रोटी नही मिलती। इतना ही नही कामपर बस से जाने के लिए बस का किराया भी उसके पास नही होता है। इस लिए साईकल पर चला जाता है। कहानीकार कहते है कि " वह अधेड आदमी साईकल चलाकर काम पर जाता है क्योंकी वह किसी सवारी का किराया नही चूका सकता। दो पहीयों को बराबर चलाते रहने को मजबूर है। नही तों गिर पडो क्या आप समझते है की वह दोनो हाथ छोडकर चलाना सिख लें तो उसे इस कैद से निजाद मिल जाएगी।"

समाज में सामाजिक विषमता कैसी फैली हुयी है और विषमता के कुछ लोग कैसे शिकार हुए है। प्रस्तुत कहानीकार में अपनी कहानियों में सामाजिक विषमता का चित्रण किया है। उसी कों समग्र रुप में प्रस्तुत करने की कोशिश 'आधी रात का तारा', 'गुब्बारे', 'सेब', 'घरौंदा', 'एक छोटीशी यात्रा', 'मेरे और नंगी औरत के बीच', 'कोठरी', 'सरकस' आदी कहानियों से स्पष्ट किया है।

संदर्भ सूची :-

१. रास्ता इधर से है - रघुवीर सहाय
२. सीढियों पर धूप में - रघुवीर सहाय
३. जो आदमी हम बना रहे है - रघुवीर सहाय
४. भारतीय समाज तथा समाजिक संस्थाए – प्रो. पी. सी. दीक्षित
५. रघुवीर सहाय का कवि कर्म - सुरेश शर्मा
६. समकालीन हिंदी कथा साहित्य में जनचेतना- डॉ अरुना लोखंडे
प्र. सं. 2009, पृ. 192

Scanned with OKEN Scanner